❍ 23 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *कर्मेन्द्रियो से कोई भी रॉग कर्म तो नहीं किया ?*

➢➢ *दुखधाम से बुधीयोग निकाल बाप और वर्से को याद किया ?*

➢➢ *व्यर्थ की अपवित्रता को समाप्त कर सम्पूरण स्वच्छ बनकर रहे ?*

➢➢ *तूफ़ान को तोहफा बनाया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जितना जो बिजी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना जरूरी है, फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ न कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा।* एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। *सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़ेगी।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ"*

〰✧ डबल लाइट बनने की निशानी क्या होगी? *डबल लाइट आत्मायें सदा सहज उड़ती कला का अनुभव करती है। कभी रुकना और कभी उड़ना ऐसे नहीं।*

〰✧ *सदा उड़ती कला के अनुभवी ऐसी डबल लाइट आत्मायें ही डबल ताज के अधिकारी बनते हैं। डबल लाइट वाले स्वत: ही ऊँची स्थिति का अनुभव करते हैं।*

〰✧ *कोई भी परिस्थिति आवे, याद रखो - हम डबल लाइट हैं। बच्चे बन गये अर्थात् हल्के बन गये। कोई भी बोझ नहीं उठा सकते।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *पॉवरफुल मन की निशानी है - सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाएँ।* ऐसे पॉवरफुल हो या कभी कमजोर हो जाते हो।

〰✧ मन को जब उडना आ गया, *प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकता है।*

〰✧ अभी-अभी साकार वतन में, अभीअभी परमधाम में एक सेकण्ड की रफ्तार है? *सदा अपने भाग्य के गीत बाते उडते रहो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *आवाज से परे होना अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होना।* तो शरीर के भान में आना जितना सहज है, उतना ही अशरीरी होना भी सहज है कि

मेहनत करनी पड़ती है? सेकण्ड में आवाज में तो आ जाते हो लेकिन सेकण्ड में कितना भी आवाज में हो, चाहे स्वयं हो या वायुमण्डल आवाज का हो लेकिन सेकण्ड में फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कोमा लगेगी, फुल स्टॉप नहीं? इसको कहा जाता है फरिश्ता व अव्यक्त स्थिति की अनुभूति में रहना, व्यक्त भाव से सेकण्ड में परे हो जाना। *इसके लिये ये नियम रखा हुआ है कि सारे दिन में ट्रैफिक ब्रेक का अभ्यास करो। ये क्यों करते हो? कि ऐसा अभ्यास पक्का हो जाये जो चारों ओर कितना भी आवाज का वातावरण हो लेकिन एकदम ब्रेक लग जाये।* आत्मा का आदि व अनादि लक्षण तो शान्त है, तो सेकण्ड में ऑर्डर हो कि अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते कि टाइम लगेगा?

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप द्वारा मिले राइट पथ पर चलना,कोई भी विकर्म न करना"*

➳ _ ➳ सूर्योदय के समय सूर्य से आती किरणों को निहारते हुए मै आत्मा.... अपने ज्ञान सूर्य बाबा की यादो में खो जाती हूँ कि... *मीठे बाबा के ज्ञान प्रकाश ने... जीवन को दिव्य गुणो से सजाकर... कितना चमकदार और आत्मिक ओज से भर दिया है.*.. मुझ आत्मा के देह भान के विकर्मो को, अपनी यादो की किरणों में भस्म कर.... मुझे आप समान तेजस्वी बना दिया

है... *अपनी शक्तियो की सारी दौलत को, मेरे कदमो में बिखेर दिया है.*.. मुझे मा ज्ञान सूर्य सजा दिया है,..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को श्रीमत के हाथो में सुरक्षित करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *सत्य पिता से सत्य ज्ञान को पाकर, सच्ची राहो के पथिक बनो.*.. सदा श्रीमत का हाथ पकड़कर, निश्चिन्त होकर, इस जीवन पथ पर यादो की छत्रछाया में आगे बढ़ो... मीठे बाबा के साथ के खुबसूरत समय में, अब कोई भी विकर्म न करे..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से ईश्वरीय मत पाकर खुशनुमा जीवन की मालिक बनकर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... मै आत्मा *आपकी यादो में और ज्ञान रत्नों की दौलत में कितनी सुखी हो गयी हूँ.*.. विकर्मो की कालिमा से छूटकर पवित्रता से सज संवर रही हूँ... आप सच्चे साथी को साथ, रख हर कर्म को श्रेष्ठ बनाती जा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को देह के दलदल से बाहर निकालते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... इस देह की दुनिया और देहभान ने आपके वास्तविक वजूद को ही धूमिल कर दिया है... विकर्मो के जाल में फंसाकर, सत्य से कोसो दूर कर दिया है... *अब जो मीठा बाबा जीवन में खुशियो की बहार लाया है... तो सत्य की राहो पर सदा चलते रहो.*.. एक पल के लिए भी मीठे बाबा की श्रीमत का हाथ कभी न छोडो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा श्रीमत की बाँहों में महफूज होकर मुस्कराती हुई मीठे बाबा से कहती हूँ :-* "मेरे सच्चे सहारे बाबा... आप जीवन में न थे तो... जीवन दुखो की गठरी सा, अंतर्मन को बोझिल किये हुए था... *मीठे बाबा आप आये, तो जीवन में आनन्द की बहारे आ गयी.*.. मै आत्मा अच्छे कर्मो से रूबरू हुई हूँ, और विकर्मो से बेमुख हुई हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सत्य और असत्य की समझ देकर बेहद

का समझदार बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... *मीठे बाबा संग सदा सच की खुबसूरत राहो पर चलते रहो... और ईश्वरीय दौलत, अथाह खजानो को अपनी बाँहों में भरकर मुस्कराते रहो.*.. मीठे बाबा को पा लिया, सब कुछ पा लिया सदा इस नशे में झूमते रहो... जो बाबा ने सिखलाया है... उन्ही श्रेष्ठ कर्मो और दिव्य गुणो की धारणा से, जीवन को शानदार बनाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा के प्यार में अतीन्द्रिय सुख पाते हुए कहती हूँ :-* "मेरे दिल के आराम बाबा... *आपने मुझ आत्मा का कितना प्यारा और शानदार भाग्य सजाया है... कि परमधाम से धरा पर आकर, मुझे काँटों से फूलो जैसा महका रहे हो.*.. अपनी पालना देकर, मुझे मनुष्य से देवता बना रहे हो... सुखो के फूल मेरे जीवन में खिला रहे हो..."मीठे बाबा को दिल की गहराइयो से शुक्रिया कर मै आत्मा... साकार वतन में लौट आयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अब वापिस घर चलना है इसलिए इस देह को भी भूलना है*"

➳ _ ➳ एक खुले एकांत स्थान पर बैठ प्रकृति के सुन्दर नज़ारो का मैं आनन्द ले रही हूँ और अपने 5000 वर्ष के जीवन की लम्बी मुसाफिरी के बारे में विचार कर रही हूँ कि *जब मैंने अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में इस सृष्टि पर आकर अपनी जीवन यात्रा शुरू की थी उस समय मैं आत्मा कैसी थी! अपनी सम्पूर्ण जीवनयात्रा के हर सीन को मैं अब बुद्धि रूपी दिव्य नेत्र से देख रही हूँ*। अपना परमधाम घर छोड़ कर अपनी जीवन यात्रा की शुरुआत करने के उस सुहाने सफर को मैं देख रही हूँ।

➳ ➳ पहली बार अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान अत्यंत तेजोमय, सर्वगुणों और

सर्वशक्तियों से सम्पन्न स्वरूप के साथ सम्पूर्ण सतोप्रधान सृष्टि पर अवतरित होना और सुन्दर सतोप्रधान देवताई शरीर धारण कर *21 जन्म अपरमपार सुख, शान्ति, और सम्पन्नता से भरपूर जीवन का आनन्द लेने के बाद देह भान में आने से, इस अति सुखद जीवन यात्रा को विकारों का ग्रहण लगना और इस जीवन में दुःख, अशांति का समावेश होना*। अपनी सम्पूर्ण जीवन यात्रा के एक - एक सीन को देखते हुए मन ही मन अपने प्यारे पिता का मैं धन्यवाद करती हूँ जो मेरे जीवन की लम्बी मुसाफिरी के इस अंतिम पड़ाव पर स्वयं मेरे साथी बन मुझे सभी दुखों से छुड़ाकर वापिस अपने घर ले चलने के लिए आये हैं।

➳ _ ➳ "अब घर जाना है" यह स्मृति मुझे मन ही मन प्रफुल्लित कर रही है और मेरे स्वीट साइलेन्स होम की मीठी गहन शान्ति जैसे मेरा आह्वान कर रही है। *अपने स्वीट साइलेन्स होम की अति मीठी गहन शान्ति का अनुभव करने और शांति के सागर अपने प्यारे पिता का असीम प्यार पाने के लिए अब मैं मन बुद्धि की अति सुखमय यात्रा पर चलने के लिये तैयार हो जाती हूँ*। स्वयं को भृकुटि सिहांसन पर विराजमान अति सूक्ष्म चैतन्य सितारे के रूप में अनुभव करते हुए मैं उस अद्भुत शक्ति को देख रही हूँ जो इस शरीर को चलाने का आधार है, जिसके बिना ये शरीर आज भी जड़ है। *वो शक्ति जो इस शरीर मे विराजमान होकर आँखों से सुनती है, कानों से देखती है, मुख से बोलती है, स्थूल और सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से कर्म करती है*।

➳ _ ➳ उस चेतन सत्ता को जो सत, चित, आनन्द स्वरूप है, को मन बुद्धि रूपी दिव्य नेत्रों से निहारते हुए, मैं उसमे समाहित गुणों और शक्तियों का अनुभव कर, मन ही मन आनन्दित हो रही हूँ। *एक गहन सुखद अनुभूति मुझे अपने इस स्वरूप को देख कर हो रही है। अपने उज्ज्वल स्वरूप को निहारते और उसमे समाये गुणों और शक्तियों का अनुभव करते - करते अब मैं आत्मा देह की कुटिया से बाहर निकलती हूँ और ऊपर खुले आसमान की ओर चल पड़ती हूँ*। एक सेकण्ड में पूरे विश्व की परिक्रमा कर, मैं तारा मण्डल, सौर मण्डल को पार कर जाती हूँ और फ़रिशतों की आकारी दुनिया से होती हुई, चैतन्य सितारों की अपनी निरकारी दुनिया में पहुँच जाती हूँ।

➳ _ ➳ चमकती हुई मणियों की दुनिया, अपने इस घर में आकर मैं गहन शान्ति का अनुभव कर रही हूँ। लाल प्रकाश से प्रकाशित मेरे पिता का यह घर और यहाँ की गहन शांति मुझे असीम तृप्ति का अनुभव करवा रही है। *अपने प्यारे पिता से मिलने की उत्कंठा मन मे लिए मैं महाज्योति अपने शिव पिता के पास जा रही हूँ जो अपनी सर्वशक्तियों की किरणो रूपी बाहों में मुझे समाने के लिए आतुर हैं*। सम्पूर्ण समर्पण भाव से स्वयं को उनकी किरणो रूपी बाहों में छोड़ कर मैं स्वयं को हर बोझ से मुक्त अनुभव कर रही हूँ। मेरे प्यारे पिता का असीम स्नेह उनकी सर्वशक्तियों की रंग बिरंगी किरणो के रूप में मुझ पर बरस रहा है। *ऐसा लग रहा है जैसे स्नेह का कोई मीठा झरना मेरे ऊपर बह रहा है और अपना असीम प्यार मुझ पर बरसा कर मेरी जन्म - जन्म की प्यास बुझा रहा है*।

➳ _ ➳ अपने शन्तिधाम घर में अथाह सुकून और शांति पाकर और अपने प्यारे पिता का असीम स्नेह पाकर मैं वापिस कर्म करने के लिए फिर से अपनी कर्मभूमि पर लौट रही हूँ। देह रूपी रथ पर सवार होकर, कर्मेन्द्रियों से कर्म करते अब मैं इस स्मृति से सदा हर्षित रहती हूँ कि सृष्टि का ये नाटक अब पूरा हो रहा है और हम घर जा रहें हैं। *घर जाने की यह स्मृति मुझे देह और देह की दुनिया से उपराम करती जा रही है। देह में रहते हुए भी अपने लाइट स्वरूप और अपने परमधाम घर की स्मृति मुझे कर्म करते हुए भी देह से न्यारा कर, मन बुद्धि से बार - बार मेरे उस घर में ले जाती है और मुझे गहन शन्ति से भरपूर करके सदा प्रफुल्लित रखती है*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं व्यर्थ की अपवित्रता को समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ बनने वाली

आत्मा हूँ।*
✺ *मैं होलिहंस आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा नॉव और खिवैया की मजबूती को अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव तूफान को तोहफा बना लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा साक्षीदृष्टा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *आज से हर एक अपने में देखे - दूसरे का नहीं देखना। दूसरे की यह बातें देखने के लिए मन की आंख बंद करना।* यह आंखें तो बंद कर नहीं सकते ना, लेकिन मन की आंख बन्द करना - दूसरा करता है या तीसरा करता है, मुझे नहीं देखना है। *बाप इतना भी फोर्स देकर कहते हैं कि अगर कोई विरला महारथी भी कोई ऐसी कमजोरी करे तो भी देखने के लिए और सुनने के लिए मन को अन्तर्मुखी बनाना।*

➳ _ ➳ हंसी की बात सुनायें - बापदादा आज थोड़ा स्पष्ट सुना रहे हैं, बुरा तो नहीं लगता है। अच्छा-एक और भी स्पष्ट बात सुनाते हैं। *बापदादा ने देखा है कि मैजारिटी समय प्रति समय, सदा नहीं कभी-कभी महारथियों की विशेषता को कम देखते और कमजोरी को बहुत गहराई से देखते हैं और फालो करते हैं।* एक दो से वर्णन भी करते हैं कि क्या है, सबको देख लिया है। महारथी भी करते हैं, हम तो हैं हीपीछे। अभी महारथी जब बदलेंगे ना तो हम बदल जायेंगे। *लेकिन महारथियों की तपस्या, महारथियों के बहुतकाल का पुरूषार्थ उन्हों को एडीशन मार्क्स दिलाकर भी पास विद आनर कर लेती है।* आप इसी इन्तजार में रहेंगे कि महारथी बदलेंगे तो हम बदलेंगे तो धोखा खा लेंगे इसलिए मन को अन्तर्मुखी बनाओ। समझा।

➳ _ ➳ यह भी बापदादा बहुत सुनते हैं, देख लिया... देख लिया। हमारी भी तो आंखे हैं ना, हमारे भी तो कान हैं ना, हम भी बहुत सुनते हैं। लेकिन महारथियों से इस बात में रीस नहीं करना। *अच्छाई की रेस करो, बुराई की रीस नहीं करो, नहीं तो धोखा खा लेंगे। बाप को तरस पड़ता है क्योंकि महारथियों का फाउन्डेशन निश्चय, अटूट-अचल है,उसकी दुआयें एक्स्ट्रा महारथियों को मिलती हैं।* इसलिए कभी भी मन की आंख को इस बात के लिए नहीं खोलना। बंद रखो। *सुनने के बजाए मन को अन्तर्मुखी रखो।* समझा।

✺ *ड्रिल :- "बुराई को देखने की मन की आँख बन्द करना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने ईश्वरीय विश्व विद्यालय में... बापदादा के चित्र के आगे बैठी हूँ... सामने प्राण प्यारे बाबा मुझे देख मन्द मन्द मुस्करा रहें हैं...* मैं आत्मा झट से बाबा के गले लग जाती हूँ... मेरे बाबा... मेरे मीठे प्यारे बाबा... कहते हुए बाबा की गोद में बैठ जाती हूँ... *आहा!!... बाबा का स्पर्श पाते ही स्वयं को जन्नत की परी... जैसा अनुभव कर रही हूँ... बाबा की यादों में खोकर मैं आत्मा रुई जैसी हल्की हो रही हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा हल्की होकर... उड़ती हुई पहुँच जाती हूँ अपने मीठे वतन में... जहाँ शिव बाबा... कोहिनूर हीरे से भी तेज़ चमक रहे हैं... उनसे निकलता किरणों रूपी प्रकाश चारों ओर अपनी लालिमा फैला रहा है... *मैं आत्मा बाबा से निकलती दिव्य तेजस्वी किरणों को स्वयं में धारण कर रही हूँ... स्वयं को समर्थ व शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ... मुझ आत्मा के आसुरी अवगुण भस्म हो रहे हैं...* अविनाशी बाबा के प्रेम में लवलीन हुई मैं आत्मा एकरस स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...

➳ _ ➳ *अब मैं आत्मा अन्तर्मुखी बन... साइलेन्स की शक्ति से स्वयं ही स्वयं की चेकिंग कर रही हूँ...* अब मुझ आत्मा में किसी की बुराई देखने का अवगुण तो नहीं है...? हरेक के पार्ट को साक्षीदृष्टा बन देख रही हूँ...? *मुझे बापदादा के शब्द याद आ रहें हैं... बदला नहीं लेना... बदल कर दिखाना है... सी नो ईविल...*अब मैं आत्मा साइलेन्स की शक्ति से किसी की बुरी बात या बुरे सम्बन्ध को... अच्छाई में परिवर्तित कर रही हूँ... साक्षीदृष्टा बन हरेक के पार्ट को देख रही हूँ...

➳ _ ➳ *अब मैं आत्मा महारथियों के पुरुषार्थ* को... उनकी विशेषताओं को... बहुत गहराई से देख रही हूँ... *उनका अमृतवेले उठना... मुरली क्लास सुनना... सुनाना... दुःखी अशांत आत्माओं को सकाश देना... उनका बहुतकाल का पुरुषार्थ... उनका बाबा पर... ड्रामा पर... अटूट निश्चय...* मैं आत्मा उनकी विशेषताओं को देख... उन्हें फॉलो कर... तीव्र पुरुषार्थी बन रही हूँ... हरेक के प्रति शुभ भावना शुभ कामना... रख रहीं हूँ...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा सदा अटेंशन रख... साइलेन्स की शक्ति द्वारा... अन्तर्मुखी बन... हरेक के गुणों को देख रहीं हूँ... *मैं आत्मा संकल्प शक्ति द्वारा हर एक की बुराई को देखते हुए भी उसे अच्छाई में परिवर्तित कर रही हूँ...* तीव्र पुरुषार्थी बन सदा उड़ती कला में रह अन्तर्मुखी स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔